एक टुकड़ा आदमी

मानिक बच्छावत



अमिताभ प्रकाशन
२०, बालमुकुन्द मक्कर रोड,
कलकत्ता-७

C मानिक बच्छावत



प्रकाशक :

अमिताभ प्रकाशन

२०, बालमुकुन्द मक्कर रोड,

कलकत्ता-७

फोन : ३४-१६३६

मुद्रक :

अजन्ता फाइन आर्ट प्रेस

२०, बालमुकुन्द मक्कर रोड,

कलकत्ता-७

मूल्य ५) प्रथम संस्करण १ जुलाई, १९६७

एक टुकड़ा आदमी

अनुक्रम

• • •



एक टुकड़ा आदमी



एक टुकड़ा आदमी



पशु

जिस हवा मे,
मैं साँस लेता हूँ,
वह हवा दूषित हो गई है
और अब हवा का एक
टुकड़ा भी नहीं बचा जो
शुद्ध रह गया हो।

मुझे अब सिफलिस और
केन्सर से कोई भय नहीं
मेरे लिए यह एक मामूली बात है।

मैं पशुओ की टोली में
खड़ा हूँ और महसूस करता हूँ
मेरी जांघे
पशुओं की तरह दाग कर
मुहरित कर दी गई है
मै पशु हो गया हूं।



गदहा

अलसेसियन कुत्ते ने
गदहे को खदेड़ा
गदहे ने लात मारी
अलसेसियन चीखा
फालतू कुत्तों ने स्वर मिलाया
वे भौंके
बेचारा गदहा रो उठा !
चीख उठा !!
बेचारा गदहा !!!



गुंडे

जिन्होंने पाला गुंडा
खिलाते सदा सेर भर
पिलाते हो सेर दूध
सुलाते नरम बिछौने पर
नहलाते डेटॉल के पानी से
रोज़,
अन्धभक्त के बच्चों
मेरी बात सुनो !
तुम गुंडे मत पालो ।
●

अफसर

एक अफसर
बैठा दफ्तर के बाहर
बड़ी बड़ी मूँछें
टेबुल पर फाइलों का गट्ठर ।
गट्ठर पर रखी टोपी

घूरता चपरासी
जिसकी नीची गर्दन
अफसर सेंकता धूप
फैला कर टाँगें ।

●

बिल्ली

रोज रात
मेरे दरवाजे से
चुपचाप
एक बिल्ली गुजरती
मैं सोया सोया
देखता
दरवाजा बन्द नही
कर पाता।



जिन्दगी

कीड़ों से किलबिलाते
नगर में
जोंक बन जीना,
संतोषी कबूतर सा
फटेहाल रहना
जिन्दगी नहीं।



उल्लू

प्राथमिक पाठशाला का
शिक्षक
ब्लैक बोर्ड पर लिखता है
एक शब्द
उ......ल्लू......—
और हम
तमाम जिन्दगी
बार बार दोहराते है
उल्लू !
उल्लू !!
उल्लू !!!
उल
•

लखनऊ की शाम

वड़े इमाम वाड़े से
खसक कोई
वेवा तन्वंगी दुपहर
दौड़ पड़ी।
हजरतगंज के
चिक्कनदार कुर्त्तों पर
उतर आई शाम।



आईना

आईने में देखते है
सूरतें
सूरतें देखती हैं आईना
और फिर
सूरतें—सूरतें
आईना—आईना।



कार

पिछली सीट के गढ़े में, दुबक
बैठे
दो तोंदीयाये शरीर ।
उच्चक निकालते
अपना दर्प,
झांकते,
स्याह भरी खीज ।
●

अस्तित्व

जैसे भी हो
जहाँ भी हो
बेरहम
भीड़ में ठसना-पसरना
रोज सुबह उठना
शाम तक भूख से लड़ना
रात को एक पुराने
अफीमची सा लुढ़कना।

कामरोग

हवा के हर
रन्ध्र में है
जिस्म की बू।
काम का मारा आदमी
तोड़ता अंग
झटकों से


पीने का पानी

पीने के पानी के
नल पर
नहाती है बुढ़िया
तांगे वाला पिलाता है
घोड़े को पानी
आवारा कुत्ता किये
टांग ऊँची करता है तर्पण
नगरपालिका के नाम पर
नागरिकों का अर्पण।



अभिसारिका

चुस्त वदन कपड़ों में
सँवरी
अभिसारिकाओं
रेस्ट्राओं के इर्द गिर्द
मँडराती तितलियों
तुम्हारे हेलानिक जुड़ों में
चिड़ियों के घोंसलों सी उलझन में
कितने अवोध युवकों की
हँसियाँ कैंद हो गई हैं।
तुम्हें अब अपने कपड़ों के
वखिये उधड़ने का भय नहीं
तुम्हारी वड़ी-वड़ी चट्टानी आँखों में
रोमान्स के टिसू नहीं
शरीर की गंध है
जिस्म की भूख है।
ओ ! अभिसारिकाओ
तुम्हारे टॉपलेस रूप की
कल्पना
हमारी आँखों की लाज लील गई
और अब हमें कुछ दिखाई नही देता।

सैंडविच

एक
चिकनी उदास टेबुल
जिस पर रखी
सैंडविच की थागें
और उन थागों में
डूबा
एक गट्ठर आदमी।

चार पाँच टन प्रेसर से
तनी हुई नसें
लो ब्लड प्रेसर का हारर
भय से काँपती देह
चुराकर निगाहें
कुतर रहा सैंडविच
गले के नीचे उतर नहीं
रही सैंडविच।

●

शहर

शहर
किसी मरे हुए
कुत्ते सा
सड़ रहा चौराहे पर।
o

चलना

चलना,
चलना और रुकना
आवारा आँखों का
उड़ना,
चलना,
सिर्फ महसूस करना।

●

मन

कई वार
मन ने चाहा
कुछ ऐसा करे
जो न किया जा सके
कुछ ऐसा खाये
जो खाया न जा सके
कुछ ऐसा लिखे
जो लिखा न जा सके
किन्तु,
बेबस मन
सिर्फ दुहराता ही
रह गया !
सिर्फ दुहराता !!

•

जिन्दगी

हमारी जिन्दगी
उस मुड़ी हुई
किताब के पन्नो की
तरह है
जो किसी अनपढ़
पाठक की पकड़ में
कसमसा रही है।

•

प्यार

आज हमने प्यार की
संज्ञा बदल दी
ओ !
गलत माध्यमों से
गर्भस्थ होने वाले
शिशुओं !
तुम न घबराओ
हम निडर है, निश्चित है
तुम्हें न जन्माएँगें।



गिरना

अर्र्र्र् धम्
गिरना
कच्ची उम्र के पैरों का
फिसलना
पुनः उठ पड़ना
फुर्ती से।

●

उठना

नये बच्चे सा
अँगुली पकड़कर
उठना
तूफानी गति से बढ़ना
इस्पात के पीलर सा
गहरे धँसना।
और गहरे धँसना
●

दाग

पोर्टफोलियो पर
उभरी खरोंचे
जूतों पर ठोकरों के
निशान
मुलायम त्वचा पर
बिखरे मोती के दाग
बेतरतीब, बेतरह !
●

सहवास

नदी नहीं छूटती
टूटता नहीं आकाश
पाँच सात महीनों का
बिछुड़ना
फिर वही सहवास।



पोट्रेट

टैरेस पर
टहलती
मुगल कपड़ों में
लड़की,
बैठती
जालीदार झरोखे में !
मैं
देखता
कांगड़ा कलम के
चित्रो में
नूरजहाँ का
पोट्रेट !


मेरे मित्र की पत्नी का मूड

मेरे मित्र की
पत्नी ने
एक दुपहर
तेवर बदला ।
गत रात देखी
फिल्म
गिनां लो लो ब्रिगिदा ।
तड़फ कर झपटी
चिल्लाई, कपड़े फाड़े, फूलदान फेंके ।
मेरा मित्र दुबक कर भागा
उसके हाथों पर
नाखूनों के निशान थे,
नेल पॉलिस की खरोंचे थी
चीख उठा !
हाय ! हाय !
गिना लो लो ब्रिगिदा !!!
○

गप्पों और गलत अफवाहों से घिरे लोग

सुवह होते ही
इस शहर में गप्पें शुरू होती है।
निठल्ले लोग
सूरज निकलते ही
भांग, अफीम गांजा और चरस की
टोह में निकलते
तमाम दिन ताश चौपट खेलते
हुक्के गुड़गुड़ाते
आने जाने वालों पर छींटे उड़ाते
संक्रामक रोगों की तरह
अफवाहे फैलाते है।
आज अमुक की लड़की को
अमुक के लड़के से बातचीत करते देखा
फलां की विधवा पतोहु को
फलां के घर से निकलते देखा।
कुछ लड़कियां घर से भाग गई
कई अविवाहितों ने सन्तान प्रसव की।
इस तरह सुवह से शाम तक
गप्पें अपने नये-नये रंगों में निखरती है।
रात को जब ये लोग
आँखों में काजल डाले
हाथों में गजरा लिए

अपनी बेढंगी चालों में घर लौटते है
तो ये गप्पें और अफवाहें
इन्हें पकड़ कर
डसतीं है, ग्रसती है और
निगल जाती है
और ये लोग सारे शहर में
गप्पों और अफवाहों का
विषय बन जाते हैं।



शिकायत

अंतस्थल खोला
और संजोया प्यार लोगों में
बाँटा !
किन्तु, उनका
हिस्सा
खाली रह गया,
आश्चर्य !
उन्हें
कोई शिकायत नहीं।

●

एक आवरण पृष्ठ

यह दृश्य—
किसी एक सस्ते उपन्यास का
आवरण पृष्ठ है
जो किसी घटिया
कमर्शियल आर्टिस्ट से
पूरे पैसे न देकर अँकवाया गया है।
पेड़ क्या ?—एक ठूंठ है
जिसे हरे रंग से
किसी तरह लथेड़ा गया है।
बिजली के खम्मे से
जॉन्डिस के मरीज सा
पीला रंग छन कर आ रहा है।
खंभे के सहारे एक
लड़की चुपचाप खड़ी है
जिसकी एक चोटी
नकली रेशम पर उभरी पड़ी है।
ओठ बेपरवाह लिपिस्टिक से
अधिक लाल है
मुँह के
गड्ढों को छिपाने के लिए कपोलों पर
जिसने बेबाक पाउडर रूज लथ रखा है।
आँखों की भौंहों को गहरा किये

नजरें कलाई घड़ी पर पड़ी हैं
(न मालूम वह ऐसे क्यों खड़ी है)
शायद वह उपन्यास की नायिका हो !
शायद उस कलाकार की चिड़चिड़ी पत्नी हो !!
या शायद उस घटिया प्रकाशक की
रखेल हो वह !!!



बात

एक बात पूछूं—
झूठ तो न बोलोगे
सच सच बताओगे !
ना...
क्या कहा—
हाँ......
अब बताओ बचकर
कहाँ जाओगे !!



धुँध डूबा शहर

सारा शहर।
आज धुँध ओढ़े पसर गया
या फिर यह धुँध
किसी सिरफिरे अजगर सी
पूरे शहर को ही लील गयी।
हर इमारत, आदमी और रास्ते
भूत के डेरे दिखने लगे
या फिर किसी पुराने शराबी के
अन्दाज में बहकने लगे।
शहर के लिए यह कोई नई बात नहीं
गिरती रात तक यहाँ का वासिन्दा
खाज मारे कुत्ते की तरह
गली, कूंचे, बॉर, रेस्ट्राँ सूंघता है।
चौराहे का सिपाही
ओवरकोट में गर्दन छिपाये ऊँघता है।
सैंकड़ों बेमेल जोड़े हाथों में हाथ डाले
कशमशाते जा रहे है।
बिगड़ैल बूढ़ों की गर्दन
शरीर जीवी युवतियों की
नंगी जांघों पर है।
इन युवतियों ने पिल्स खा रखी है
और बूढ़े खांसते है, खांसते जाते है

दिसम्बर की धुंध में सब कुछ
लौट गया
सिर्फ लैम्पपोस्टों के धुंधले
प्रकाश में धुंआ उड़ाती
अस्तित्वहीन प्रौढ़ाएँ
देहरियों पर सिर टिकाये
कुछ पतिव्रताएँ
जागती हैं।
महसूस होता यह सब
इस शहर के लिए
उतना ही महत्वहीन है
जितना इस धुंध का ठहराव।



प्रश्न

अचानक
डवल डेकर की
खिड़कियों से
बहुत सारे
प्रश्न एक साथ
उठते ।
समानान्तर
चलती
केडलॉक के
शीशे हिलते ।
प्रश्न
खिड़कियों से
केडलॉक के
शीशों पर चिपकते ।
नरम हाथ
शीशे बन्द करते,
कर नहीं पाते ।
वहीं के वहीं रह जाते ।
प्रश्न से
जा टकराते ।

●

रोमान्स के कीटाणु

वगल से
गुजर गई
जूही के
जूड़े की गंघ।
हवा में फैल गये
रोमान्स के कीटाणु
संक्रामक।



मशीन का आदमी

एक बहुत बड़े
कारखाने में
आदमी
रोज रिक्त स्थानों की
पूर्ति करता है।
नट और बोल्ट सा
फिट होता है।
पारी बदलता है
रूटीन और कायदा
अदा करता है।
औरऐसा करते समय उसकी
तमाम भावनाएँ,
आकांक्षाएँ, सपने,
दूर भाग जाते है।
एक्सीडेंट के भय से
एकाग्र
फौलाद चीरता है
फर्मे चढ़ाता है
डाईस काटता है
और घिसते घिसते
वह मशीन का
हो जाता है

और उस समय
वह कोई कवि या दार्शनिक
नहीं होता।
होता है तो सिर्फ
मशीन का आदमी !



प्रेस्क्रिप्शन

मैंने
अपनी जिन्दगी
पर्स में बन्द कर ली
और अब वह
प्रेस्क्रिप्शन मेरा
आकाश दीप है
उसे मैंने पर्स में रख
हिप पॉकेट में डाल दिया।
जिसे मैं बार-बार
छूकर महसूस कर लिया
करता हूँ।

और जिसके होने का अहसास
मुझे बार बार सम्बल देता है।
नोटों की जगह घेर ली है
इस ने
जिन्दगी का अस्तित्व शायद
नोटों से अधिक है
इसीलिए ये
अपनी जगह नहीं
रह पाते और

खाली हाथ छूता हिप
पॉकेट
सिर्फ प्रेस्क्रिप्शन का होना महसूस
करता है।
०

हिन्दुस्तान !

हिन्दुस्तान !
ओ ! मेरे हिन्दुस्तान !
आज मैं तुम्हारे बारे में नही सोच पाता
एक किलो चावल और एक बोतल
किरासन के लिए
घंटों क्यू में खड़ा झगड़ रहा हूँ ।
हिन्दुस्तान !
आज मैंने अपने घर के तमाम
दरवाजे बन्द कर लिए है
सिर्फ एक मुट्ठी गेहूँ के
लिए भिखमंगा हो गया हूँ ।
मेरे अतिथियो !
इस तरफ भूल कर भी न आना
मैंने इतिहास की सारी किताबें
गंगा में बहा दी है और
अब भूगोल पर सोच रहा हूँ ।
हिन्दुस्तान !
मैं उन तमाम अच्छी
बातो को भुला चुका हूँ जो
मेरे संस्कारों के साथ
पैदा हुई थी और
अब मर चुकी है

हिन्दुस्तान !
यदि हम करोड़ों इन्सानों को
कोई मवेशी कहे
यदि हम सब के सब मरे
हुए समझ लिए जाय
तो तुम क्या कहोगे ?
हिन्दुस्तान !
मुझे अब कुछ भी दिखाई नहीं देता
मेरी आँखें पथरा गयी है।
ओफ !   मैं कितना दयनीय हूँ !
हिन्दुस्तान !
क्या तुम्हें अपना
नक्शा साफ साफ दिखाई
देता है ?
हिन्दुस्तान !
बोलते क्यों नहीं हिन्दुस्तान ?
●

परिचय

मेरा
और उनका
पिछले सात वर्षों का
परिचय !
और इन सात वर्षो में
हम जब भी मिले हैं
पार्क की नुक्कड़ पर
कॉफी की टेबुल पर
सिनेमा की खिड़की पर
तब तब उन्होने
यही कहा है—
मैं अमुक अमुक विषयों
पर अमुक अमुक पुस्तकें
लिख रहा हूँ
मैने थीसिस सब्मिट की है
मैं डाक्टर होने वाला हूँ
मुझे स्कालरशिप
मिलने वाली है
और मैं स्टे्टस जाने वाला हूँ।
किन्तु
इन सात वर्षो में
पार्क की नुक्कड़ वहीं है

कॉफी की टेबुल वही है
सिनेमा की खिड़की वहीं है
न जाने उनकी हवाई
द्रौपदी कब नंगी होगी ?

०

दफ़नाया-अहम्

सदियों पहले
मैंने अपने अहम् को
मार कर
'मिश्र' की ममियों की तरह
रख दिया था।
लेकिन आज
रिसर्च स्कालर-लेखक-कवि-
मेरे अहम् के बारे में सोचते है।
लिखने की योजना बनाते हैं !!
और मैं इस हॉरर से कांप जाता हूँ
कि कहीं मेरे अहम् को जगा कर
मुझे ही न मार डालें।



कलेन्डर का आखिरी दिन

एलीवेटर से
हड़बड़ा कर
भीड़ बेतहासा
इस तरह निकली
मालूम हुआ
एक लम्बे
कारावास के बाद
बहुत से कैदी मुक्त हुए।



पति

उन्हें इस बात का
कोई अफसोस नहीं होता
यदि कोई उनका पति न हुआ होता
और महसूस भी
तभी होता कि
उनका कोई पति है
जब
उन्हें पहनने को मिलती प्रतिमास
नये फैशन की दो दर्जन साड़ियाँ,
एक सौ ब्लाउज, तीन दर्जन
नायलन के पेटीकोट और
बहुत सारी मेडेन फार्म ब्रा।
घूमने के लिए बहुत सारी कारें
रहने के लिए अच्छा सा बंगलो
मन बहलाने के लिए क्लब और फ्रेन्डस्।
खाने के लिए मनचाहे रेस्त्राँ
खर्चने के लिए बड़े बड़े स्टोर
पढ़ने के लिए फिल्म और सेक्स की
पत्रिकाएँ
हॉबी के लिए पालतू कुत्ते।
जरा भी यदि होता उनको

इच्छा के विरुद्ध, तो
वे पति को बदलतीं
पतियों को बदलतीं और
बदलती चली जातीं
पुराने पड़े फैशन की तरह
और तब उस हालत में
कोई बेचारा कैसे होता पति
कैसे रह पाता पति !



बीमार आँखें

मेरी
आँखों के सामने
छा गया अन्धेरा
और अब मुझे
कुछ भी दिखाई नहीं देता
सिर्फ तैर जाती है रोशनी !
मैं जी तोड़
पिंडलियाँ खींचता हूँ
आँखों की पुतलियाँ
व्यर्थ नचाने की
कोशिश करता हूँ
किन्तु,
ढ़ीली पड़ जाती है नसें
फैल जाती है आँतड़ियाँ
और टूटने लगते है
हड्डियों के जोड़
थोड़े समय
मात्र के लिए कुछ
कौंधता है
फिर निढ़ाल में
लटक जाती हैं मेरी
मासूम आँखें

कमजोर आँखें
उसी अन्धरे में
वह जाती है
मेरी वीमार आँखें !



एक टुकड़ा आदमी

टूटा हुआ मकान
उखड़े हुए फर्श
जोड़ लगी दीवारें !
दो टूक कलेजा
तीन सूखी रोटियाँ
चार लौटे आवेदन पत्र
और आधी दर्जन अनावश्यक
सन्तानें !!
दस बीस कर्जदार
सौ पचास गन्दे
बेहद बेशर्म पड़ोसी !!!
इर्द गिर्द घूमतीं अधनंगी
औरतें—
प्रौढ़ाये युवकों की फिसलती
दृष्टियाँ
सिर्फ जिस्म ही जिस्म !!!!
सैकड़ों घिनौनी सूरतें
हजारों मीलों तक फैला
दुर्व्यवस्था और

अनिश्चितता का सैलाब
जिसमें डूबता तैरता
मैं—
एक टुकड़ा आदमी !!!!!

